।। अर्हम् ।।


# आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति, श्रीडूँगरगढ़ (बीकानेर)

दूरभाष : 01565–224600,224900

ई–मेल : jstsdgh01565@gmail.com


## तो आप भी महावीर बन जायेंगे – आचार्य महाप्रज्ञ

**–तुलसीराम चौरड़िया (मीडिया संयोजक)–**

श्रीडूँगरगढ़ 26 फरवरी : आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने प्रतिदिन के प्रवचन में कहा कि मनुष्य के पास देखने और जानने की दो बड़ी शक्तियां होती है। आदमी जानता है तो अज्ञान दूर हो जाता है और देखता है तो स्वयं का बोध हो जाता है। आंख सबको देखती है पर खुद को नहीं देख सकती। जब दर्पण के सामने खड़ा होकर व्यक्ति देखता है तब उसे अपना रुप ज्ञात होता है। महान आत्माओं को देंखे वैर बिना अपना रुप सामने नहीं आता है। उन्होने कहा कि हर व्यक्ति के पास राम, कृष्ण, बुद्ध और महावीर जैसी शक्तियां होती है। अगर वह भगवान की भक्ति करते समय उसके ही तन्मय हो जाता है तो उनके गुणों को स्वयं में जागृत पाता है। जब महापुरुषों को दर्पण के रुप में प्रयोग कर अपने आप को देखें तो वह अपने भीतर की उन महान् शक्तियों को जागृत कर सकता है और खुद राम, कृष्ण, बुद्ध और महावीर बन सकता है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने आचार्य सिद्धसेन द्वारा विरचित कल्याण मंदिर स्तोत्र के त्रिसंध्या में भगवान पार्श्व की भक्ति का उल्लेख करते हुए कहा कि तीनो संध्या का महत्व है। प्रातःकाल के समय आदमी में विशेष प्रकार के रसायनों का स्राव होता है। जिनके प्रवाह को सम्यक् कर हम पूरे दिन प्रसन्न रह सकते है। समय का ज्ञान बहुत जरुरी है। कौनसे समय कौनसा काम करना चाहिए यह विवेक आवश्यक है।

इससे पूर्व युवाचार्य महाश्रमण ने गीता और उत्तराध्ययन के तुलनात्मक प्रवचन में तामसिक वृति वाले व्यक्ति को पसंद आहार का वर्णन प्रस्तुत किया। उन्होने कहा कि हित मित और ऋण्त आहार स्वास्थ्य के लिए उपयोगी होता है। गुवाहाटी में स्वरोदय समाज के सम्मेलन में भाग लेकर पहुंची समणी सत्यप्रज्ञा ने वहां पर प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अणुव्रत प्रशिक्षण की हुई चर्चा की जानकारी दी।

### स्व. चन्दनमल बैद के पारिवारिकजनों ने दर्शन किये

## बैद संघनिष्ठ श्रावक थे – आचार्य महाप्रज्ञ

राजस्थान के पूर्व वित्तमंत्री चन्दनमल बैद के पारिवारिकजनो ने आज आचार्य महाप्रज्ञ के दर्शन किये। सुपुत्र चन्द्रशेखर बैद आदि पारिवारिकजनों को आध्यात्मिक संबल प्रदान करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने चन्दनमल बैद को संघनिष्ठ श्रावक बताया। उन्होने कहा कि बैद के सामने तेरापंथ और कांग्रेश दो ही रहते थे। वे धर्मसंघ और पार्टी के प्रति पूर्ण समर्पित थे। आज के युग में राजनीति में रहने के बाद भी श्रावक की भूमिका निभाई जो विचित्र बात है। आचार्य महाप्रज्ञ ने बैद के प्रमाणिकता, संघनिष्ठा, समर्पण आदि संस्कारों को परिवार में कायम रखने की प्रेरणा दी। उन्होने सुपुत्र चन्द्रशेखर को अपने पिता के जीवन प्रसंगों को लिपि बद्ध करने की जिम्मेदारी सौंपी। उल्लेखनीय है कि बैद को पूर्व में संघप्रवक्ता और समाज भूषण अलंकरण प्राप्त हो चुके है। उन्होने आचार्य तुलसी की कृ ति अग्नि परीक्षा पर उठे विवाद के समय रायपुर से चुरु तक के घटनाक्रम में धर्मसंघ को अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण सेवा दी थी। इस मौके पर युवाचार्य महाश्रमण ने पारिवारिकजनों को संबोधित

**क्रमश : ..... 2**

करते हुए कहा कि चन्दनमल जी ने यशः शरीर रुपी दूसरे शरीर का निर्माण किया था, जो मृत्यु के बाद भी बना रहता है। उनके यशः शरीर से परिवार, समाज, राजनैतिक लोग प्रेरणा लेते रहे। उन्होने उनके नैतिकनिष्ठ व्यक्तित्व की सराहना की। इस मौके पर बैद के पारिवारिकजनों के साथ तारानगर तेरापंथ समाज के अनेक लोग भी मौजूद थे और आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था के संरक्षक बनेचंद मालू भी उपस्थित थे।

## पूर्वजन्म अनूभूति शिविर 5 मार्च से

आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में प्रवास व्यवस्था समिति के द्वारा प्रेक्षाध्यान से पूर्वजन्म अनूभूति शिविर का आयोजन 5 मार्च से 9 मार्च तक किया जायेगा। उक्त जानकारी देते हुए शिविर के निर्देशक मुनि किशनलाल ने बताया कि अपने अतीत को देखकर जो प्रेरणा लेता है वह व्यक्ति भविष्य को सुन्दर बना लेता है। पूनर्जन्म और पूर्वजन्म का सिद्धांत आज वैज्ञानिक भी स्वीकार करते हैं। इस सिद्धांत ने व्यक्ति को सद्मार्ग की ओर बढ़ाने की प्रेरणा दी है। हम प्रेक्षाध्यान के विशिष्ठ प्रयोगों से पूर्वजन्म का पता लगाकर अपने जीवन को असीम आनन्द के स्रोत की दिशा में मोड़ सकते हैं। उन्होने बताया कि 5 मार्च से लगने वाले इस शिविर में युवाचार्य महामश्रमण के द्वारा प्रशिक्षण भी समय समय पर प्रदान किया जायेगा।

**तुलसीराम चौरड़िया**
**मीडिया संयोजक/सहसंयोजक**